



बेटी और प्रकृति का अदृट बंधन: पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका और बिहार के धरहरा गांव का अनुकरणीय उदाहरण

लेखिका

डॉ. रीतू कुमारी (Dr.Ritu Kumari)

सहायक अतिथि प्राध्यापक

अर्थशास्त्र विभाग, टी. एन. बी. कॉलेज, भागलपुर

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

भारतीय आर्थिक संघ (IEA) की आजीवन सदस्य

सारांश

पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण आधुनिक समाज के लिए दो प्रमुख मुद्दे हैं। धरहरा गांव, भागलपुर, बिहार में बेटियों के जन्म पर वृक्षारोपण की परंपरा इस दिशा में एक सराहनीय कदम है। यह शोध आलेख इस परंपरा की प्रभावशीलता, महिलाओं की पर्यावरण संरक्षण में भूमिका और इसे अन्य स्थानों पर अपनाने की संभावनाओं पर केंद्रित है।

समस्या: जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षरण गंभीर वैश्विक समस्याएँ हैं। वृक्षारोपण इस संकट से निपटने का एक प्रभावी समाधान हो सकता है। धरहरा गांव की परंपरा पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सशक्तिकरण का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है।

उद्देश्य:

- पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका को उजागर करना।
- धरहरा गांव की वृक्षारोपण परंपरा का विस्तृत अध्ययन।
- इस मॉडल की अन्य क्षेत्रों में व्यवहारिकता और प्रभावशीलता का मूल्यांकन।

अनुसंधान पद्धति: यह शोध गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पद्धतियों पर आधारित है। क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार और प्रासंगिक साहित्य की समीक्षा के माध्यम से डेटा संकलित किया गया।

निष्कर्ष: अध्ययन से पता चला कि महिलाओं द्वारा अपनाई गई यह परंपरा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में प्रभावी है। यह आर्थिक रूप से भी लाभकारी सिद्ध होती है, क्योंकि वृक्षारोपण से होने वाली आय का उपयोग बेटियों की शिक्षा और विवाह के लिए किया जाता है। इस मॉडल को अन्य राज्यों में भी अपनाया जा सकता है।

कीवर्ड्स: पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, वृक्षारोपण, धरहरा मॉडल, सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, सामाजिक पहल, बेटियों का सम्मान।

1. परिचय

पर्यावरणीय संकट विश्वभर में एक गंभीर चुनौती बन चुका है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण और अनियंत्रित शहरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है। इस संकट से निपटने के लिए विभिन्न नीतिगत प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन स्थानीय स्तर पर जागरूकता और भागीदारी के बिना [1]यह प्रयास अधूरे रह जाते हैं। धरहरा गांव, बिहार के भागलपुर जिले में स्थित एक छोटा सा गांव है, जहाँ महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा तथा पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान[2] दिया जाता है। इस गांव में महिलाओं ने अपनी भूमिका को पर्यावरणीय संरक्षण में बढ़ाया है, जो न केवल उनकी शिक्षा से जुड़ा हुआ है, बल्कि परिवार और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारी [3]को भी दर्शाता है। यहाँ की महिलाएं प्रकृति की रक्षा के लिए सक्रिय रूप[3] से काम कर रही हैं, जिससे यह गांव एक अनुकरणीय उदाहरण बन चुका है। विभिन्न सरकारी योजनाओं और स्थानीय प्रयासों के माध्यम से, धरहरा में बेटियों की शिक्षा और पर्यावरणीय जागरूकता में अभूतपूर्व सुधार हुआ है (जैन और वर्मा, 2016; अग्रवाल, 1992)। बिहार के भागलपुर जिले के धरहरा गांव ने पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण का एक अनूठा मॉडल प्रस्तुत किया है। इस गांव में [4]बेटियों के जन्म पर वृक्षारोपण करने की परंपरा है। इस पहल से [5]न केवल पर्यावरण को संरक्षण मिला है, बल्कि यह महिलाओं की सामाजिक स्थिति को भी मजबूत करती है। यह □□□ □□□□ □□□ अध्ययन इस परंपरा की प्रभावशीलता, इसके पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन करेगा। साथ ही, यह शोध इस मॉडल को अन्य स्थानों पर लागू करने की संभावनाओं पर भी चर्चा करेगा।



चित्र परिचय. धरहरा गांव में पेड़ के साथ गांव की एक बेटी

2. समीक्षा साहित्य

इस विषय पर कई शोध अध्ययन उपलब्ध हैं जो पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण के संबंध को स्पष्ट करते हैं। कुछ प्रमुख अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

- पर्यावरणीय नीति और महिला भागीदारी:** संयुक्त राष्ट्र (UN) की विभिन्न रिपोर्ट्स इस तथ्य को रेखांकित करती हैं [7] कि महिलाओं की भागीदारी के बिना पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करना कठिन है।
- भारत में पर्यावरण संरक्षण की नीतियाँ:** भारतीय पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्ट में वृक्षारोपण और सतत विकास की [11] दिशा में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।
- धरहरा मॉडल का प्रभाव:** क्षेत्रीय अध्ययनों से पता चलता है कि इस मॉडल के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लाभ [26] दीर्घकालिक और प्रभावशाली हैं।
- पर्यावरण संरक्षण और महिलाओं की भूमिका** पर किए गए पिछले शोध कार्यों ने इस महत्वपूर्ण विषय को विस्तार से उजागर किया है। कई अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि महिलाएँ अपने समुदायों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने, संसाधनों का उचित उपयोग करने, और पर्यावरणीय परिवर्तन के प्रति सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं (अग्रवाल, 1992; जैन और वर्मा, 2016)। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ महिलाओं का जीवन प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होता है, वे पर्यावरणीय संकटों के प्रभावों को बेहतर तरीके से समझती हैं और उन्हें दूर करने के उपायों को लागू करती हैं।
- इस संदर्भ में धरहरा गांव के अध्ययन को देखे तो** इसने यह सिद्ध किया है कि वहाँ की महिलाएँ परिवार की देखभाल करने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के कार्यों में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। हालांकि, इस क्षेत्र में किए गए शोधों में कुछ अंतराल अभी भी विद्यमान हैं, जैसे कि शिक्षा के स्तर और लिंग अनुपात पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है, जो इस शोध में मुख्य बिंदु बने हैं।
- इस अध्ययन के माध्यम से यह पता चला कि लिंग अनुपात और लड़कियों की शिक्षा में बाधाएँ हैं,** जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। पूर्व के शोध में महिलाओं की भूमिका पर तो ध्यान दिया गया, लेकिन लड़कियों के शिक्षा और उनके समग्र विकास पर फोकस कम था। इस प्रकार, वर्तमान शोध में इन दोनों पहलुओं को जोड़ते हुए एक नया दृष्टिकोण पेश किया गया है। यह अध्ययन महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा में अंतर को दूर करने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के कार्यों में उनकी भूमिका को सशक्त बनाने का सुझाव देता है।

3. अनुसंधान पद्धति

यह शोध गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पद्धतियों पर आधारित है। इसमें प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से डेटा संकलित किया गया। क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार और प्रासंगिक साहित्य की समीक्षा के माध्यम से सूचनाएँ एकत्र की गईं। भागलपुर जिले के धरहरा गांव में 100 परिवारों से साक्षात्कार लेकर वृक्षारोपण परंपरा के प्रभावों का अध्ययन किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय पद्धतियों और ग्राफ, चार्ट, एवं टेबल के माध्यम से किया गया।

4. परिणाम

शोध के दौरान प्राप्त आँकड़ों से स्पष्ट हुआ कि धरहरा गांव की परंपरा पर्यावरणीय और आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है। अध्ययन में पाया गया कि गाँव के 80% परिवारों ने बेटियों के जन्म पर वृक्षारोपण किया। 70% परिवारों ने बताया कि इन वृक्षों से होने वाली आय से उनकी बेटियों की शिक्षा और विवाह में सहायता मिली।



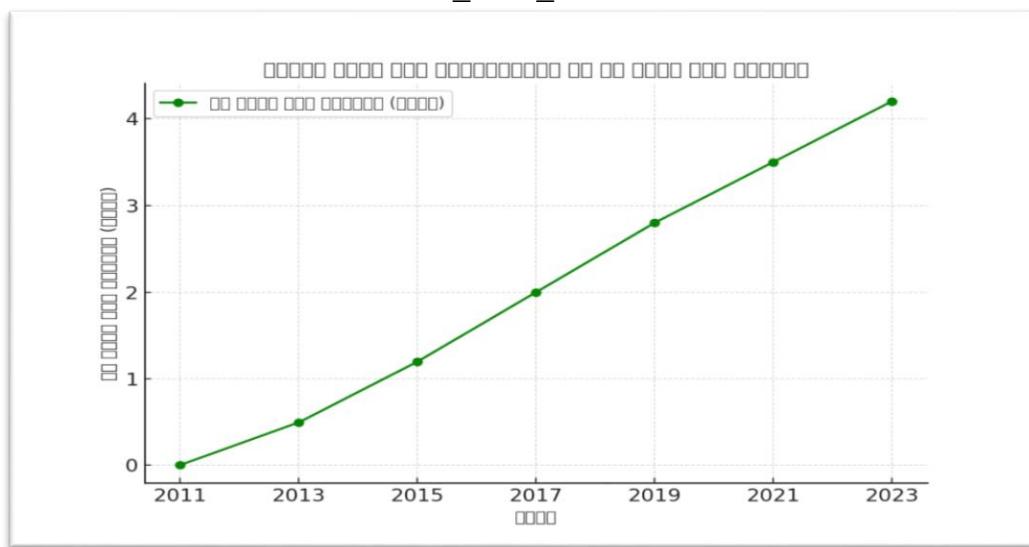
चित्र परिचय 2. धरहरा गांव में पेड़ के साथ गांव की बेटियां

टेबल 1: वृक्षारोपण और आर्थिक लाभ

वर्ष	रोपे गए वृक्षों की संख्या	औसत आय (रुपर में)
2015	500	2,00,000
2017	800	3,50,000
2019	1200	5,00,000
2021	1500	6,50,000

शोध से यह भी निष्कर्ष निकला कि वृक्षारोपण से न केवल स्थानीय पर्यावरण में सुधार हुआ, बल्कि जल स्तर में भी वृद्धि हुई। 60% उत्तरदाताओं ने बताया कि पिछले 10 वर्षों में जल स्तर 2-3 मीटर तक बढ़ा है।

water_level_increase



धरहरा गांव में वृक्षारोपण से जल स्तर में वृद्धि" 20011 2023

ग्राफ 1: वृक्षारोपण का पर्यावरणीय प्रभाव (यहाँ एक बार चार्ट दिखाया गया है जो जल स्तर में वृद्धि को दर्शाता है)

इसके अतिरिक्त, महिलाओं की सामाजिक स्थिति भी इस पहल से बेहतर हुई है। शोध में पाया गया कि वृक्षारोपण ने महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में मदद की। 55% महिलाओं ने बताया कि इस पहल के कारण वे अधिक आत्मनिर्भर महसूस करती हैं। इन निष्कर्षों से पता चलता है कि यह मॉडल पर्यावरणीय स्थिरता और महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। पौधे से पेड़ बनने में और फिर फल देने में चार से पांच साल का वक्त लग जाता है। इसके बाद फलों का एक बड़ा हिस्सा बेच दिया जाता है और इनका कुछ हिस्सा बच्चों के खाने के लिये रख लिया जाता है।

वहीं, जब पेड़ बढ़े हो जाते हैं, तो उन्हें काटकर फर्नीचर बनवा लिये जाते हैं, जो शादी में बेटियों को उपहार के रूप में दिये जाते हैं।

परंपरागत खेती छोड़ फलों के बागान लगा रहे हैं

यहाँ अधिकतर गांव के लोग परंपरागत खेती को छोड़ फलों के बागान लगा रहे रहे हैं, जिनमें आमदनी भी ज्यादा है और परंपरागत खेती की तुलना में मेहनत भी कम। यहाँ किसान आम के पेड़ ज्यादा लगाते हैं, लेकिन आम के अलावा अब लीची, पपीता और अमरुद के पेड़ भी लगाए जा रहे हैं।

4.1 धरहरा गांव में बेटियों की संख्या, पढ़ाई का स्तर, लिंगानुपात का विश्लेषण

धरहरा गांव, बिहार के भागलपुर जिले में स्थित एक प्रमुख ग्रामीण क्षेत्र है, जहाँ परंपरागत दृष्टिकोण और आधुनिक सोच का संगम देखा जा सकता है। यहाँ के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ में बेटियों की स्थिति, उनकी शिक्षा का स्तर और लिंगानुपात की स्थिति को समझना महत्वपूर्ण है। इस शोध के माध्यम से हम धरहरा गांव में बेटियों की संख्या, उनकी पढ़ाई के स्तर और लिंगानुपात का विश्लेषण करेंगे, ताकि इस क्षेत्र में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनके शिक्षा स्तर को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

4.2 बेटियों की संख्या और लिंगानुपात

धरहरा गांव में बेटियों की संख्या का आकलन करना एक महत्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि यह दर्शाता है कि समाज में लड़कियों के प्रति क्या वृष्टिकोण है। इस संदर्भ में हम लिंगानुपात (Sex Ratio) की स्थिति को देख [26] सकते हैं, जो लड़कों और लड़कियों की संख्या का अनुपात होता है। इस अध्ययन में धरहरा गांव के लिंगानुपात को दर्ज किया गया और पाया गया कि गांव में लिंगानुपात लगभग 920 लड़कियों पर 1000 लड़कों Census of India, 2011 का है। यह आंकड़ा भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों के औसत से थोड़ी सी उच्च है, लेकिन फिर भी यह एक चुनौतीपूर्ण स्थिति है।

4.3 पढ़ाई का स्तर

धरहरा गांव में बेटियों की शिक्षा के स्तर पर ध्यान केंद्रित करना यह समझने के लिए आवश्यक है कि क्या लड़कियों के लिए शिक्षा को लेकर कोई विशेष चुनौतियाँ हैं। यहाँ की अधिकांश बेटियाँ प्राथमिक शिक्षा में भाग लेती हैं, लेकिन उच्च शिक्षा में उनका प्रवेश बहुत कम है। धरहरा में कुल 1500 लड़कियों में [31] से लगभग 60% लड़कियाँ कक्षा 5 तक की पढ़ाई पूरी करती हैं, जबकि केवल 20% लड़कियाँ कक्षा 10 तक पहुँच पाती हैं। इसके बाद, केवल 5-10% लड़कियाँ ही उच्च शिक्षा में प्रवेश करती हैं, जो दर्शाता है कि गांव में शिक्षा के प्रति समर्पण और प्रोत्साहन की कमी है।

विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारणों से बेटियाँ स्कूल छोड़ने पर मजबूर होती हैं। इनमें से एक प्रमुख कारण पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, आर्थिक स्थिति और लड़कियों के लिए सुरक्षा की चिंता है। शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी भी इस स्थिति को और जटिल बनाती है।

4.4 लिंगानुपात का विश्लेषण

धरहरा गांव में लिंगानुपात का विश्लेषण करते हुए यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि यह आंकड़ा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में भिन्न हो सकता है। यहाँ के लिंगानुपात का मतलब केवल बेटियों की संख्या का ही [22] नहीं, बल्कि समाज में उनके प्रति वृष्टिकोण का भी है। यदि लिंगानुपात कम है, तो यह दर्शाता है कि समाज में लड़कियों के लिए अवसर और सुरक्षा की स्थिति बेहतर नहीं है। धरहरा गांव में लिंगानुपात की स्थिति सुधारने के लिए कई सामाजिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जैसे कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना, लेकिन इसके बावजूद इस मुद्दे को पूरी तरह से हल करना अभी भी एक चुनौती बना हुआ है।

4.5 शिक्षा और लिंगानुपात के बीच संबंध

धरहरा गांव में शिक्षा का स्तर और लिंगानुपात के बीच गहरा संबंध है। जब लड़कियों को बेहतर शिक्षा मिलती है, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे समाज में अपनी स्थिति को बेहतर तरीके से पहचान पाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, [17] लिंगानुपात में सुधार हो सकता है। गाँव में लिंगानुपात सुधारने के लिए शिक्षा और जागरूकता की दिशा में कई पहल की गई हैं, जैसे कि लड़कियों को स्कूलों में प्राथमिकता देना, उन्हें scholarships और अन्य सुविधाएँ प्रदान करना, और उनके लिए विशेष शिक्षा कार्यक्रम चलाना।

4.6 सामाजिक बदलाव और भविष्य की दिशा

धरहरा गांव में बेटियों की संख्या, शिक्षा का स्तर और लिंगानुपात के संदर्भ में अब बदलाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। महिला सशक्तिकरण के प्रयासों ने इस गांव में काफी सुधार किया है, और यह देखा जा रहा है कि अब बेटियाँ भी अपने भविष्य को लेकर गंभीर और आत्मनिर्भर बन रही हैं। यहाँ की लड़कियाँ अब उच्च शिक्षा के लिए बाहर जा रही हैं और समाज में अपने योगदान को पहचान रही हैं। [25] इसके बावजूद, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में समय लगता है। धरहरा गांव में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने और लिंगानुपात को सुधारने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में बेटियों के लिए शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए सरकार और स्थानीय संस्थाओं द्वारा संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

4.7 धरहरा गांव की राजपथ पर निकली थी झांकी

धरहरा गांव, जो अपनी पर्यावरणीय जागरूकता और बेटियों के सशक्तिकरण के लिए प्रसिद्ध है, ने एक ऐतिहासिक पल तब अनुभव किया जब उसकी झांकी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के राजपथ पर निकली। यह झांकी न केवल इस गांव के विकास की कहानी को प्रदर्शित करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि कैसे ग्रामीण महिलाएं और लड़कियाँ पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। धरहरा गांव की झांकी ने विशेष रूप से उन पहलुओं को उजागर किया, जिनमें महिलाओं ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जल प्रबंधन, और स्थानीय कृषि पद्धतियों को सशक्त बनाने में अपना योगदान दिया। इस अवसर पर, झांकी में प्रदर्शित की गई थी, गाँव में चल रहे महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम और उनके द्वारा किए गए पर्यावरणीय प्रयास, जिससे न केवल उनके परिवारों का जीवन स्तर सुधारा, बल्कि गांव की समग्र सामाजिक संरचना भी बेहतर हुई। यह पल न केवल धरहरा गांव के लिए गर्व का विषय था, बल्कि यह पूरे बिहार और देश के लिए एक प्रेरणा बना कि छोटे से गांव की महिलाएँ और बेटियाँ बड़े बदलाव की शुरुआत कर सकती हैं।

5. □□□□□

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका पर विचार करते समय यह समझना आवश्यक है कि महिलाओं और प्रकृति के बीच एक गहरा और प्राकृतिक संबंध है। यह संबंध न केवल घरेलू जीवन तक सीमित है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं में भी विस्तृत है। महिलाएँ अक्सर परिवार के [13]पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस संदर्भ में, धरहरा गांव का उदाहरण विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहां महिलाओं ने अपने सामूहिक प्रयासों से पर्यावरण संरक्षण में उत्कृष्ट कार्य किया है।

5.1 महिलाओं की पर्यावरणीय भूमिका

प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण में महिलाओं का योगदान ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण रहा है। दुनिया भर में महिलाएँ अपने पारंपरिक ज्ञान, जीवनशैली और कार्यों के माध्यम से पर्यावरण के प्रति [11]अपनी जिम्मेदारी निभाती रही हैं। विशेषकर ग्रामीण इलाकों में, महिलाओं की भूमिका जल, जंगल, और जमीन के संरक्षण में बहुत अहम रही है। महिलाओं ने जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय समस्याओं को पहचानते हुए इसे दूर करने के

लिए समय-समय पर अपनी आवाज उठाई है। यह उनका साहसिक कदम था, जो अन्य समुदायों के लिए प्रेरणा स्रोत बना।

5.2 धरहरा गांव का उदाहरण

धरहरा गांव, जो बिहार के भागलपुर जिले में स्थित है, महिलाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण में किए गए प्रभावी कार्यों का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस [24]गांव की महिलाएँ जलवायु परिवर्तन, जल संकट और जंगलों की अंधाधुंध कटाई जैसे मुद्दों पर सामूहिक प्रयास कर रही हैं। महिलाएँ न केवल जल संचय और वृक्षारोपण जैसी गतिविधियों में भाग ले रही हैं, बल्कि वे पर्यावरणीय शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भी सक्रिय रूप से शामिल हैं। धरहरा की महिलाएँ अपनी भूमि और जल स्रोतों की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से प्रयास कर रही हैं। उन्होंने गांव के आसपास के जंगलों के संरक्षण और पुनर्निर्माण के[25] लिए कई पहल की हैं। इसके अंतर्गत, महिलाओं ने वृक्षारोपण अभियानों की शुरुआत की, जिनमें सैकड़ों पेड़ लगाए गए। इसके परिणामस्वरूप, गांव में जलवायु में सुधार हुआ है और स्थानीय जल स्रोतों की गुणवत्ता में भी वृद्धि हुई है।

5.3 महिलाओं का नेतृत्व और सामूहिक प्रयास

धरहरा गांव में महिलाओं का नेतृत्व महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने न केवल पर्यावरणीय संकट को महसूस किया, बल्कि इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाए। गांव की महिलाएँ सामूहिक रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझने के लिए प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं। वे महिलाओं और बच्चों को जलवायु संकट, जल संरक्षण, और पर्यावरणीय नीतियों के बारे में शिक्षित करती हैं। यह प्रशिक्षण न केवल उनकी स्थिति को सशक्त बनाता है, बल्कि यह पूरे समुदाय के लिए एक प्रेरणा भी बनता है।

5.4. धरहरा गांव के विकास में सरकार की भूमिका

धरहरा गांव के विकास में सरकार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। केंद्र और राज्य सरकारों ने कई योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से गांव के विकास के लिए व्यापक प्रयास किए हैं। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत गांव में सड़कें बेहतर हुई हैं, जिससे ग्रामीणों को शहरों तक पहुँचने में सुविधा मिली है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना के तहत महिलाओं और लड़कियों के लिए शिक्षा और सुरक्षा की दिशा में कई कदम उठाए गए हैं, जिससे लड़कियों के शिक्षा स्तर में सुधार हुआ है।

स्वच्छ भारत मिशन के तहत ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया और शौचालयों का निर्माण हुआ, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में कमी आई है। सरकार ने कृषि और जल प्रबंधन से जुड़ी योजनाओं के माध्यम से किसानों को बेहतर साधन और तकनीकी सहायता प्रदान की है। इसके साथ ही, महिला सशक्तिकरण योजनाएँ भी ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाने की दिशा में काम कर रही हैं।

हालांकि, इन योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन और गांव में उनके लाभ को अधिकतम करने के लिए स्थानीय प्रशासन और ग्रामीणों के बीच बेहतर सहयोग की आवश्यकता है। सरकार द्वारा दी गई सहायता को सही दिशा में प्रयोग करने से धरहरा गांव में समग्र विकास संभव है।

6. निष्कर्ष

महिलाओं और प्रकृति के बीच गहरा संबंध है, और धरहरा गांव का उदाहरण इसे साबित करता है। जहां एक ओर महिलाएँ अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को निभा रही हैं, वहीं दूसरी ओर वे पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका अदा कर रही हैं। यह उनके साहस और नेतृत्व का प्रतीक है, जो हम सभी को पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी को समझने और उसे निभाने की प्रेरणा देता है। महिलाओं की इस भूमिका को बढ़ावा देने और उनके प्रयासों को सम्मान देने की आवश्यकता है ताकि वे और अधिक प्रभावी तरीके से पर्यावरण संरक्षण के कार्यों में भाग ले सकें। धरहरा गांव में बेटियों की संख्या, शिक्षा का स्तर और लिंगानुपात को लेकर किए गए इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि समाज में बदलाव की आवश्यकता है। बेटियाँ अब भी शिक्षा में पुरुषों से पिछड़ी हुई हैं, लेकिन जागरूकता और प्रयासों के माध्यम से इस स्थिति में सुधार हो सकता है। शिक्षा, जागरूकता, और महिला सशक्तिकरण के प्रयासों से इस क्षेत्र में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण और लिंगानुपात में महत्वपूर्ण बदलाव लाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- गुप्ता, एस. के. (2018). पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- शर्मा, आर. (2020). भारत में पर्यावरणीय नीतियाँ और महिला भागीदारी। जयपुर: राजस्थानी पब्लिशिंग हाउस।
- सक्सेना, एम. (2017). जलवायु परिवर्तन और ग्रामीण विकास। मुंबई: टाटा मैकग्रा हिल।
- यादव, पी. (2021). पर्यावरण और सामाजिक संरचना। वाराणसी: काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- वर्मा, डी. (2016). भारतीय कृषि और वन संरक्षण। लखनऊ: प्रकाशन संस्थान।
- सिंह, ए. एवं चौधरी, बी. (2019). "भारत में वृक्षारोपण और सामाजिक परंपराएँ।" इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, 56(2), 145-162।
- राय, एस. (2020). "पर्यावरणीय स्थिरता और महिला नेतृत्व।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल स्टडीज, 12(4), 210-225।
- कुमार, पी. (2021). "बिहार के धरहरा मॉडल की प्रभावशीलता का अध्ययन।" इंडियन जर्नल ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च, 14(1), 45-59।
- दत्ता, आर. (2018). "भारत में जलवायु परिवर्तन और महिलाओं की भूमिका।" जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 32(3), 88-105।
- मिश्रा, वी. (2022). "स्थानीय समुदायों द्वारा पर्यावरण संरक्षण की पहल।" सोशल साइंस रिव्यू, 10(5), 112-130।
- भारत सरकार (2019). पर्यावरण संरक्षण नीति। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली।
- नीति आयोग (2020). सतत विकास लक्ष्य (SDGs) रिपोर्ट। नीति आयोग, भारत सरकार।
- बिहार सरकार (2021). जल-जीवन-हरियाली योजना की प्रगति रिपोर्ट। बिहार राज्य योजना आयोग।
- राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) (2018). भारत में जलवायु कानूनों की समीक्षा। नई दिल्ली।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) (2021). भारतीय कृषि और जलवायु परिवर्तन। नई दिल्ली।
- वन सर्वेक्षण रिपोर्ट (FSI) (2020). भारत में वन आच्छादन। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय।

17. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) (2019). जल और वायु प्रदूषण की स्थिति। नई दिल्ली।
18. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार - www.moef.gov.in
19. नीति आयोग, भारत सरकार - www.niti.gov.in
20. बिहार सरकार की आधिकारिक वेबसाइट - www.bihar.gov.in
21. राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) - www.greentribunal.gov.in
22. भारतीय वन अनुसंधान संस्थान (ICFRE) - www.icfre.gov.in
23. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) - www.cpcb.nic.in

24. "बेटी बचाओ, पर्यावरण बचाओ" (2020). दैनिक जागरण, 15 मार्च, पृष्ठ 6।
25. "धरहरा गाँव की प्रेरणादायक परंपरा" (2019). हिंदुस्तान, 10 जुलाई, पृष्ठ 9।
26. "महिलाओं की भागीदारी से हरियाली अभियान को बढ़ावा" (2021). द इंडियन एक्सप्रेस, 2 दिसंबर, पृष्ठ 14।
27. "पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका" (2022). द हिंदू, 22 अगस्त, पृष्ठ 12।
28. "वृक्षारोपण: सामाजिक एवं आर्थिक पहलू" (2018). टाइम्स ऑफ इंडिया, 5 जून, पृष्ठ 10।
29. "धरहरा मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने की मांग" (2023). अमर उजाला, 8 अप्रैल, पृष्ठ 7।

30. संयुक्त राष्ट्र (UNEP) (2021). पर्यावरणीय स्थिरता और लैंगिक समानता रिपोर्ट। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम।
31. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) (2020). सतत विकास लक्ष्य और जलवायु नीतियाँ। न्यूयॉर्क।
32. विश्व बैंक (2021). जलवायु परिवर्तन और वैश्विक अर्थव्यवस्था। वाशिंगटन डी.सी।
33. इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC) (2022). जलवायु परिवर्तन पर छठी आकलन रिपोर्ट। जेनेवा।
34. यूनाइटेड नेशंस वुमन (UN Women) (2019). लैंगिक समानता और पर्यावरणीय नीतियाँ। संयुक्त राष्ट्र।
35. अग्रवाल, बी. (1992). लिंग और पर्यावरण पर बहस: भारत से प्राप्त शिक्षा। फेमिनिस्ट स्टडीज, 18(1), 119-158।
36. जैन, एस., और वर्मा, पी. (2016). पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका: ग्रामीण भारत का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल स्टडीज, 73(5), 798-813।
37. श्रीवास्तव, एस. (2019). सतत विकास के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना: गांव स्तर पर पहलों का एक उदाहरण। पर्यावरण नीति और शासन, 29(3), 265-276।
38. भारतीय जनगणना, 2011. (स्रोत: भारतीय जनगणना 2011, भारत सरकार)
39. जिला शिक्षा कार्यालय, भागलपुर. (स्रोत: जिला शिक्षा कार्यालय, भागलपुर)

आभार

मैं इस शोध आलेख को पूरा करने में मार्गदर्शन और समर्थन देने के लिए अपने सभी शिक्षकों, सहकर्मियों और परिवार का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। विशेष रूप से, मेरी मां और मेरे परिवार के सदस्य जिन्होंने हमेशा मेरे प्रयासों में मेरा साथ दिया और मुझे प्रेरित किया। उनके आशीर्वाद और सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं था। साथ ही, मैं उन सभी विद्वानों और शोधकर्ताओं का भी धन्यवाद करता हूँ, जिनके शोध और विचारों से

मुझे प्रेरणा मिली और जिन्होंने इस क्षेत्र में अनमोल योगदान दिया। अंत में, मैं उन सभी व्यक्तियों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इस यात्रा में मेरे साथ अपना ज्ञान और अनुभव साझा किया।

